Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

Original Article

झारखण्ड की श्रमिक जनजातीय महिलाएँ : एक परिचय

कृपा लकडा [1],डॉ. सुषमा गाड़ी[2],
[1]इतिहास विभाग वाई. बी. एन. विश्वविद्यालय, राँची
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, वाई. बी. एन. विश्वविद्यालय, राँची
Email:

Manuscript ID:
JRD -2025-170830
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 8(B)|
Pp. 162-164
Aug 2025
Submitted:16 July. 2025
Revised: 01 Aug. 2025
Accepted: 16 Aug. 2025
Published: 31 Aug. 2025

सरांश

महिलाएँ किसी भी समाज का एक अहम हिस्सा हैं समाज का सार्थक विकास उनके विकास के बिना सम्भव नहीं है। महिला विकास एवं महिला सशक्तिकरण से जहाँ पूरे समाज की विकास की दर में वृ(एवं विकास की गुणवता में सुधार आता है वहीं दूसरी तरफ सिर्फ आर्थिक विकास से महिलाओं का स्वतः विकास हो जाए यह आवश्यक नहीं है इसलिए विकास के मापदण्डों के निर्धारण में विकास को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है।

तथ्यों का विश्लेषण :–

झारखण्ड में कुल 32 जनजातियाँ पाई जाती है जिनकी जनसंख्या लगभग 86,45,042 है जो झारखण्ड की जनसंख्या में से 26.27{ है इन जनजातियों में से 8 आदिम जनजातियाँ है जिनकी जनसंख्या 1,92,425 है जो 0.72 है झारखण्ड में महिला श्रमिकों की संख्या 2019–20 में 41.31 प्रतिशत था जो सन् 2020–21 में 42.56 प्रतिशत तथा 2021–22 में 47.1 प्रतिशत तथा 2022–23 में 47.1 रहा है। जनजातिय समुदाय की आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी रहती है एवं आर्थिक क्रिया – कलापों में वे पुरूषों के समकक्ष या उनसे ज्यादा लेकर परिवार की आमदनी में बराबर का सहयोग करती हैं।[1]

जिस प्रकार यदि एक सुन्दर फुलवारी हो और उस फुलवारी में ऐसे फूल के पौधे लगाए जाए जो न तो फूलते है और न फलते है तो उस सुन्दर फुलवारी की अहमियत ही क्या है? मात्र पौधों की झाड़ी मात्र है इसी भाँति यदि मजबूत और सुदृढ़ धड़ का एक पेड़ हो तो डालियाँ भी मजबूत होगी, यदि डालिया मजबूत होगी तो फूल भी सुन्दर और फल भी रसदार होगें इसी प्रकार यदि परिवार रूपी पेड़ का धड़ यानी – पिता मजबूत और डाली रूपी – माँ आदर्श होगी तो फल–फूल अर्थात् – बच्चे भी अवश्य ही होनहार होगें अगर डाली धड़ से अलग किया जाए तो न तो धड़ का कोई मान मर्यादा होगा और न डाली की धड़ मात्र एक ठूँठ रह जाएगा और डालियाँ सुख जाएगी इस प्रकार धड़ और डाली एक दुसरे के पूरक है इसी तरह नारी बिना नर का अस्तित्व है और न नर बिना नारी का वे दोनों में नारी का स्थान अधिक महत्वपूर्ण है इसलिए कहा जाता है ”नारी बिना संसार अस्तित्व हीन है।[2]

मध्य काल में विदेशियों के आगमन से महिलाओं की स्थिति में बहुत गिरावट आई अशिक्षा एवं रूढ़ियाँ जकड़ती गई। घर की चारदीवारी में कैद होती गई और महिला एक अबला रमणी और भोग्य बन कर रह गई महिलाओं का पुनरूत्थान ब्रिटिश काल से प्रारम्भ होती है ब्रिटिश शासन के 200 वर्षो में महिलाओं के जीवन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अनेक सुधार आएँ औधोगिकरण शिक्षा का विस्तार सामाजिक आन्दोलन एवं महिला संगठनों का उदय व सामाजिक विधानों ने महिलाओं की दशा में सुधार की ढोस शुरूवात की स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व महिलाओं की निम्न दशा के प्रमुख कारण अशिक्षा, आर्थिक, निर्भरता, धार्मिक, भेदभाव, जाति बंधन महिला नेतृत्व का अमात तथा पुरूषों का उनके प्रति हेय दृष्टिकोण आदि थे। स्वतंत्रापूवर्क बाल–विवाह संयुक्त परिवार प्रथा वैवाहिक कुरीतियाँ जैसे अंतर विवाह, कुलीन विवाह, दहेज प्रथा तथा विधवा विवाह पर नियंत्रण आदि ने महिलाओं की स्थिती को गिराने में सहयोग दिया मुसलमानों के लगातार आक्रमण ने महिलाओं का घर से बहार निकलना बन्द करवा दिया।[3]

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
कृपा लकडा, इतिहास विभाग वाई. बी. एन. विश्वविद्यालय, राँची

How to cite this article:
लकडा, . कृपा ., & गाड़ी, . सुषमा . (2025). झारखण्ड की श्रमिक जनजातीय महिलाएँ: एक परिचय. Journal of Research and Development, 17(8(B)), 162–164. https://doi.org/10.5281/zenodo.17233297

Quick Response Code:
Website:
https://jrdrvb.org/
DOI:
10.5281/zenodo.17233297
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

स्वंतत्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं की स्थिति और भी अधिक सुधार हुआ सरकार द्वारा आर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक कल्याण कारी योजनाओं और विकासत्मक कार्यक्रयों का संचालन किया आज महिलाएँ आत्मनिर्भर स्वनिर्मित और आत्मविश्वासी है। जिसने पुरूष प्रधान चुनौती पूर्ण क्षेत्रों में अपनी योग्यता प्रदर्शित की है।

आज प्राड्डति मूलक झारखण्डी समाज के समक्ष अपनी संस्ड्डति अस्मिता एवं राजनीतिक बन चुकी है आजादी के 57 वर्षो में केन्द्र सरकार द्वारा झारखण्ड क्षेत्र के विकास हेतु कई कल्याणकारी योजनाएँ चलायी गई लेकिन सरकार की नौकरशाही एवं जंगलों को छीनकर बड़े बांध कलकारखाने एवं परियोजनाएँ बनायी गई इससे झारखण्ड में गरीबी, बेरोजगारी विस्थापन पुनर्वास पलायन एवं उग्रवाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई। विडम्बना यह है कि अंग्रेजों द्वारा आदिवासियों की जमीन की सुरक्षा हेतु बनाये गय कानून ;छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट एवं संथाल परगना टेनेसी एक्टद्ध भी उनकी जमीन के हस्तांतरण को रोकने में कारगर सि(नहीं हो पाये न ही सरकार से उन्हे आज तक उचित मुआवजा प्राप्त हुआ है इस प्रकार झारखण्ड के करीब 40 प्रतिशत निवासी आज भी गरीबी रेखा के नीचे हैं। इसमें महिलाएँ उत्पादन कार्यो विशेष कर खेती मजदूरी और बनोपज संकलन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होने के कारण अपेक्षाड्डत अधिक प्रभावित हुई है इसलिए काम की तलाश में महानगरों एवं नगरों में भेजी जा रही हैं जहाँ काफी कम मजदूरी पर ईठ भट्ठों में काम एवं घरों में आया गिरी करने को मजबूर है जहाँ उनके कोई मजबूत संगठन एवं स्वतंत्र यूनियन नहीं होने के कारण उन्हें मानसिक एवं शारीरिक शोषण का शिकार होना पड़ता है।

झारखण्ड की अर्थव्यवस्था महिलाओं के कंधो पर टिकी हुई है[4] अपनी बची–खुची जमीन पर महिलाएँ सिंचाई अच्छे बीज एवं खाद के अभाव अपने परिश्रम से साग–सब्जी उपजाकर पीठ पर बच्चा बाँध सर पर टोकरी लाद कर शहरों में बेचने जाती हैं लेकिन बिचौलिये रास्ते में ही उनसे कौड़ियो के भाव खरीद लेते है इससे उन्हें मेहनत का उचित मूल्य भी नहीं मिल पाता है विडम्बना यह है कि घर गाँव के पुरूषों से उन्हें किसी प्रकार का सहयोग नहीं मिल पाता है उल्टा वे उनसे बचा हुआ पैसा भी छीनकर हड़िया–दारू पीकर मारपीट करते हैं कार्य में असुरक्षा के साथ–साथ मजदूरी में भेदभाव बढ़ता जाता है वहाँ भी वे पेट की खातिर ठेकेदारों का शोषण बर्दाशत करने को विवश हैं।

झारखण्ड की आदिवासी महिलाएँ जिनके पास सूरत है दूर तक पसरी ऊबड़ खाबड़ धरती है धरती पर काले नंगे पहाड़ है पहाड़ पर जंगल है सपने हैं सपनो में पीछा करती अधूरी इच्छाएँ है बस और क्या है इनके पास? इन्ही प्रातों की ओर अपनी योग्यता क्षमता और रूचि के अनुसार ये महिलाएँ अपना मार्ग तलाशती हैं पर मंजिल दूर–दूर तक कहीं कोई अता–पता नहीं होता कुछ गाँव छोड़ अपने आसपास के शहरों के चक्कर में छोटे मोटे फार्मो में काम करने लगती है तो कुछ प्राइवेट स्कूलों में कुछ दलालों के चक्कर में पड़कर राजनेताओं या अफसरों का एजेन्ट बन जाती है और कुछ दूर दराज के नगरों महानगरों में मरने खपने चली जाती हैं कुछ स्वयंसेवी संस्थानों के मकड़जाल में ताउम्र फंसकर रह जाती है तो कुछ गलत रास्ते इख्यिार कर अपने हाथों अपनी जिन्दगी बर्बाद कर लेती है और तमाम जगहों पर उनका कई तरह से शोषण होता है एक तो यह जी तोड़ मेहनत करने पर भी उन्हें उचित मजदूरी नहीं मिलती।[5]

आदिवासी महिलाओं पर एक नजर डालें तो यह स्पष्ट होगा कि यह अनपढ़ अशिक्षित ही नहीं शोषित पीड़ित भी हैं जो किसी तरह मेहनत–मजदूरी कर अपनी जीविका चलातीं हैं न जंगल पर उनका अधिकार है न उनके पास जमीन है, न शिक्षा है, न पूँजी न कोई उन्नत तकनीक बस एक ही रास्ता है मेहनत–मजदूरी का! पर अपने गाँव या आसपास उन्है पर्याप्त समय के लिए काम नहीं मिलता। अतः वे निकटवर्ती शहरों में जाकर कुली–रेजा का काम करती हैं। ईट–भट्ठों सड़क मकान या पुल निमार्ण में काम करती हैं जहाँ उनका दोहरा शोषण होता है। एक तो मजदूरी कम, साथ ही हाड़–तोड़ मेहनत और ठेकेदार, मुंशी–मिस्त्री ड्राईवर से लेकर अधिकारियों के हंसी–मजाक डांट, फटकार, गाली–गलौज एवं यौन शोषण तक की शिकार होती है।[6] धान रोपणी और कटनी के समय भारी संख्या मे ंदल बना कर बंगाल या असम चली जाती हैं, जहाँ उनका मानसिक और शारीरिक शोषण होता है ये खाली पेट भूख लिए जाती है और पेट साजकर वापस लौटती हैं। सिंहभूम, छोटानागपुर और संथाल परगना के अंचलों में प्रायः हर आदिवासी लड़कियों को ईट भट्ठे के ठेकेदार बहला फुसलाकर ले जाते हैं और मामूली–सी मजदूरी पर हाड़तोड़ मेहनत करवाते हैं साथ ही अपनी और अपने करिंदों की हवस का शिकार भी बनाते हैं। ऐसी हजारों लड़कियाँ आज भी लापता हैं उनके माँ–बाप छटपटा कर रह जाते हैं वे इन ठेकेदारों के खिलाफ कुछ नही ंकर पाते।[7]

निष्कर्ष

अब सवाल यह उठता है कि आखिर ये महिलाएँ कौन होती है? उनके जीवन का अस्तित्व क्या होता है? उनका भविष्य क्या होता है? सूक्ष्म निरीक्षण करने पर हम यह पाते है कि इनमें कुछ ऐसी कुवारी लड़कियों होती है जो अर्थाभाव या पारिवारिक समर्थन के अभाव में पढ़ाई अधूरी छोड़ कर काम की तलाश में निकल पड़ती हैं तो कुछ तलाकशुदा होती है जो अपने बल बुते पर जीवन जीने की तमन्ना पाले आती है तो कुछ बेमेल शादी की अपनी मानसिक पीड़ा से तंग आकर नई जिन्दगी जीने का सपना देखती हैं कुछ ऐसी शादी शुदा महिलाएँ भी होती है जिनके पति अन्यत्र कहीं काम करते हुए पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होते हैं।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-8(B)| August - 2025

संदर्भ सूची :–

1. अरूप महारत्न "मैग्रोफिल पर्सक्टिव ऑन इंडियाज ट्राइबल, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली 2005, पृ.204
2. जोसेफ मरियानुस कुजूर और विकास झा दिल्ली में आदिवासी महिला घरेलू कामगार भारतीय सामाजिक संस्थान, नई दिल्ली, 2009, पृ.49
3. डॉ. रेणु दीवान विहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना 2000, पृ.39
4. लॉरेंस पास्कल एस.जे.,संदेश दीर्घाघार, पटना 2021,पृ.20
5. डॉ.रेणु दीवान बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रेमचंद मार्ग राजेन्द्रनगर पटना, पंचम संस्करण, जुलाई 2004, पृ.03
6. वही पृष्ट–4
7. पूर्वोदृत पृष्ट–10
8. वही पृष्ट–64